

बड़े भाई साहब

पाठ का सार



प्रस्तुत पाठ बड़े भाई साहब मैं एक बड़े भाई हैं और एक छोटे भाई दोनों के बीच 5 वर्ष का अंतर है लेकिन दर्जे में दोनों के बीच पांच साल का अंतर है

बड़े भाई साहब

प्रेमचन्द



बड़े भाई साहब

प्रेमचन्द



दोनों भाई अभी छोटे ही हैं लेकिन उम्र में बड़ा होने के कारण बड़े से घर वालों को बड़ी बड़ी अपेक्षाएं हैं। बड़ा होने के कारण वह भी यही चाहता है कि वह जो कुछ करें, वह छोटे के लिए एक उदाहरण बन जाए



इसी कारण बड़ा भाई अपना बचपन भी
तिरोहित कर देता है वह यह नहीं
चाहता कि उसका छोटा भाई गलत रास्ते
पर चले इस के लिए वह उसे डाँटता
भी है और उपदेश भी देता है



बड़ा भाई बहुत ही अध्ययन शील है।
वह हर समय पढ़ता ही रहता है।
अपने दिमाग को आराम देने के लिए
वह पशु -पक्षियों के चित्र बनाता है।
कभी-कभी ऐसी शब्द-रचना करता
है, जो किसी की समझ नहीं आती।





छोटा भाई हर समय खेलकूद में ही व्यस्त रहता है। वह थोड़ा बहुत पढ़ता है, लेकिन जब भी पढ़ता है तो मन लगाकर पढ़ता है। इसी कारण वह परीक्षा में अक्वल रहता है।

दूसरी बार परीक्षा में पास होने से छोटे भाई को यह एहसास हो गया, कि उसका भाग्य बहुत अच्छा है। वह पढ़े या न पढ़े ,पास तो हो ही जाएगा । इसलिए अब वह स्वच्छंद होकर हर समय खेलने में ही मग्न रहता था।



बड़े भाई ने छोटे भाई के सामने भारतीय शिक्षा का बहुत भयंकर चित्रण प्रस्तुत किया। एक दिन खेल के मैदान में पतंग पकड़ने की होड़ में उसका सामना छोटे भाई से हुआ तो उसने छोटे भाई से कहा उसका भी दिल खेलने को करता है, लेकिन यदि वह गलत रास्ते पर चलेगा तो तुम्हें सही रास्ते पर कैसे ला सकेगा इसलिए उसे अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता है।



बड़े भाई साहब

प्रेमचन्द



उस दिन छोटे भाई को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने सोचा कि बड़ा भाई जो कुछ करता है, वह उसी के लिए ही करता है। दोनों भाई प्रसन्न चित्त होकर खेलने लगे और अंत में अपने छात्रावास की ओर चले गए।